वन्दे मातरम

सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की प्रथम उद्घोषणा

वन्दे मातरम्

रचयिता

बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय

संकल्पना

अमित शाह

(गृह एवं सहकारिता मंत्री, भारत सरकार)

प्रेरणा

श्री टी.के. मित्रा

प्र प्रभात
प्रकाशन

प्रस्तावना

बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय जी ने सन् 1875 में जगद्धात्री पूजा (कार्तिक शुक्ल नवमी/अक्षय नवमी) के दिन अमर स्तोत्र 'वन्दे मातरम्' की रचना की, जिसे आगे चलकर उन्होंने अपने प्रसिद्ध उपन्यास 'आनंदमठ' में सम्मिलित किया। कालांतर में यह गीत प्रत्येक देशभक्त भारतीय का कंठस्वर बन गया।

मातृस्तुति 'वन्दे मातरम्' केवल मातृभूमि की वंदना का गीत नहीं, बल्कि उस राष्ट्रीय चेतना का उद्घोष है, जिसमें भारत के प्रति प्रेम उपभोग से नहीं, उपासना से उत्पन्न होता है; अधिकार से नहीं, कर्तव्य से पुष्ट होता है; तथा स्वार्थ से नहीं, समर्पण से महान बनता है। यह भारत की आत्मा की भावपूर्ण अभिव्यक्ति है, जिसके भीतर सहस्राब्दियों की सांस्कृतिक स्मृति, स्वतंत्रता का संकल्प, मातृभूमि के प्रति अनन्य भक्ति तथा राष्ट्रजीवन का नैतिक आधार समाहित है। वस्तुतः, 'वन्दे मातरम्' भारतीय सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की प्रथम सशक्त उद्घोषणा है, जिसने भारत को केवल एक राजनीतिक नहीं, बल्कि एक चिरंतन सांस्कृतिक इकाई के रूप में देखने की राष्ट्रीय दृष्टि को स्वर प्रदान किया।

हमें 'वन्दे मातरम्' की रचना की पृष्ठभूमि को भी स्मरण रखना चाहिए। सदियों के संघर्षों और विदेशी शासन के दौर में भारत की संस्कृति, परंपराओं और राष्ट्रीय चेतना को अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ा। अंग्रेजी शासन के दौरान भारतीय समाज पर एक नई संस्कृति और जीवन-दृष्टि थोपने का प्रयास भी किया गया। पराधीनता के उस कालखंड में राष्ट्र का सामूहिक आत्मविश्वास निरंतर क्षीण हो रहा था, ऐसे समय बंकिम बाबू ने पुनर्जागरण का एक ऐतिहासिक कार्य किया। उन्होंने 'वन्दे मातरम्' के माध्यम से भारतीय जनमानस में आत्मगौरव, सांस्कृतिक चेतना और मातृभूमि के प्रति समर्पण का भाव जाग्रत किया। भारतभूमि को माता के रूप में देखने तथा उनकी आराधना करने की हमारी सनातन परंपरा को उन्होंने पुनः प्रतिष्ठित किया। यही कारण है कि 'वन्दे मातरम्' भारत की संस्कृति के प्रति श्रद्धा रखने वाले करोड़ों लोगों के लिए पुनर्जागरण का मंत्र बन गया और इसने राष्ट्र की आत्मा को जाग्रत करने का कार्य किया। इसी भाव को व्यक्त करते हुए महर्षि अरविंद ने कहा था कि "वन्दे मातरम् भारत के पुनर्जन्म का मंत्र है।"

औपनिवेशिक भारत के सबसे अंधकारमय काल में रचित 'वन्दे मातरम्' राष्ट्रीय जागरण का प्रभात-गीत बनकर उभरा। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान देश-विदेश में जहाँ भी भारत की स्वतंत्रता के लिए समर्पित लोग एकत्रित होते थे, वहाँ 'वन्दे मातरम्' के उद्घोष से ही बैठकों का आरंभ होता था। स्वतंत्रता, स्वाभिमान और राष्ट्रभक्ति का यह मंत्र इतना प्रभावशाली था कि असंख्य स्वतंत्रता सेनानियों ने अपने अंतिम क्षणों में फाँसी के फंदे को हँसते-हँसते चूमते हुए 'वन्दे मातरम्' का उद्घोष किया। इसी प्रकार यह भारतीयों के लिए राष्ट्र की आत्मा को जाग्रत करने वाला मंत्र, राष्ट्रीय पुनर्जागरण का प्रेरणास्रोत तथा भारत के पुनर्निर्माण का सांस्कृतिक आधार बन गया। साथ ही, यह उस आदर्श का भी प्रतीक है, जिसके माध्यम से भारत को पुनः विश्व समुदाय में गौरवपूर्ण एवं अग्रणी स्थान पर प्रतिष्ठित करने की प्रेरणा प्राप्त होती है।

भारत की राष्ट्र-कल्पना को लेकर हमारे सार्वजनिक जीवन में सदैव दो प्रकार की विचारधाराएँ विद्यमान रही हैं। एक विचारधारा भारत को केवल भूमि का एक टुकड़ा अथवा ऐसा भौगोलिक क्षेत्र मानती है, जिसे सुविधा, सत्ता, संसाधनों और उपभोग की दृष्टि से देखा जाता है। इसके विपरीत, हमारी राष्ट्र-दृष्टि भारतभूमि को एक भौगोलिक इकाई के रूप में नहीं, बल्कि मातृस्वरूप में देखती है—उस माँ के रूप में, जो हमारी रक्षा करती है, हमारा लालन-पालन करती है तथा हमें अन्न, जल, वायु के साथ संस्कृति, संस्कार और चेतना से पोषित करती है।

यह भाव भारत को एक भू-सांस्कृतिक राष्ट्र के रूप में प्रतिष्ठित करता है, जिसकी एकता उसकी संस्कृति, सभ्यता और साझा राष्ट्रीय चेतना से निर्मित होती है। यह नागरिक को अधिकार-भोगी नहीं, अपितु कर्तव्यनिष्ठ संतान के रूप में स्थापित करता है। वन्दे मातरम् इसी राष्ट्र-दृष्टि की सबसे सशक्त अभिव्यक्ति है। यह रचना 'वन्दे मातरम्' की प्रत्येक पंक्ति का चित्रात्मक भाष्य प्रस्तुत करती है। इसमें निहित चित्र केवल शब्दों का रूपांकन नहीं, बल्कि स्वतंत्रता संग्राम की चेतना, राष्ट्रनिर्माताओं के आदर्श, मातृभूमि के प्रति अनन्य भक्ति तथा सहस्राब्दियों से प्रवाहित भारतवर्ष की सांस्कृतिक परंपरा के सारतत्त्व का सजीव निरूपण हैं।

बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय जी की सार्धशती के पावन अवसर पर भारत सरकार ने यह निर्णय लिया है कि राष्ट्रगीत 'वन्दे मातरम्' को राष्ट्रगान 'जन गण मन' के समकक्ष सम्मान एवं गरिमा प्रदान की जाएगी। यह निर्णय राष्ट्रजीवन में 'वन्दे मातरम्' के अमिट योगदान का औपचारिक सम्मान है। आज, यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में हम 'वन्दे मातरम्' के 150 वर्ष पूर्ण होने का महोत्सव मना रहे हैं। प्रधानमंत्री जी ने अत्यंत सारगर्भित शब्दों में कहा है, "हम सभी के लिए 'वन्दे मातरम्' का 150वाँ वर्ष इसके ऋण को स्वीकार करने का पावन पर्व है। हमें इससे प्रेरणा लेकर उस भावना को आत्मसात करना चाहिए, जिसने देश की आज़ादी की लड़ाई को शक्ति प्रदान की। उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम–पूरा देश एक स्वर में 'वन्दे मातरम्' के उद्घोष के साथ आगे बढ़ा। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम सब मिलकर देश को साथ लेकर चलें। स्वतंत्रता सेनानियों के सपनों को साकार करने के लिए 'वन्दे मातरम्' हम सभी की प्रेरणा और ऊर्जा बने तथा वर्ष 2047 तक भारत एक विकसित राष्ट्र के रूप में स्थापित हो।"

प्रधानमंत्री जी ने अमृतकाल के लिए जिन पंच प्रणों–गुलामी की मानसिकता से मुक्ति, अपनी विरासत पर गर्व, देश की एकता और अखंडता, नागरिकों में कर्तव्य की भावना तथा विकसित भारत के संकल्प–का आह्वान किया है, 'वन्दे मातरम्' उन सभी की सांस्कृतिक चेतना और भावनात्मक आधारशिला है।

'वन्दे मातरम्' की रचना के 150 वर्ष पूर्ण होने के शुभ अवसर पर प्रस्तुत इस अमर कृति का चित्रात्मक रूपांतरण मातृभूमि के प्रति समर्पण, भक्ति और कर्तव्यबोध का सशक्त संदेश देता है। यह केवल चित्रों का संकलन नहीं, बल्कि भारतवर्ष की अखंड राष्ट्रीय चेतना, सांस्कृतिक विरासत और मातृभूमि के प्रति समर्पण के शाश्वत संदेश का दृश्य रूपांतरण है। यह उन शाश्वत मूल्यों का सजीव संवाहक है, जिन्होंने भारत के स्वतंत्रता संग्राम को प्रेरणा प्रदान की और जो आज भी राष्ट्रनिर्माण की प्रक्रिया का मार्ग आलोकित कर रहे हैं। यह चित्रात्मक प्रस्तुति नई पीढ़ी को 'वन्दे मातरम्' की ऐतिहासिक विरासत, सांस्कृतिक भाव और राष्ट्रीय आदर्शों से परिचित कराएगी। साथ ही, उनमें राष्ट्रप्रेम, कर्तव्यनिष्ठा, त्याग और समर्पण की भावना का संवर्धन करेगी तथा विकसित, आत्मनिर्भर और महान भारत के निर्माण में सक्रिय, उत्तरदायी एवं सार्थक सहभागिता के लिए निरंतर प्रेरित करती रहेगी।

!! वन्दे मातरम् !!

अमित शाह

(गृह एवं सहकारिता मंत्री, भारत सरकार)

शुक्ल पक्ष द्वितीया, आषाढ़, विक्रम संवत 2083, जगन्नाथ रथ यात्रा

वन्दे मातरम्

वन्दे मातरम्, वन्दे मातरम् ॥
सुजलाम् सुफलाम् मलयजशीतलाम्,
शस्यश्यामलाम् मातरम्।
वन्दे मातरम्॥

शुभ्रज्योत्स्ना पुलकितयामिनीम्, फुल्लकुसुमित द्रुमदलशोभिनीम्,
सुहासिनीम् सुमधुरभाषिणीम्, सुखदाम् वरदाम् मातरम्।
वन्दे मातरम्॥

कोटि-कोटि कण्ठ कल-कल निनाद कराले,
कोटि-कोटि भुजैर्धृत खरकरवाले,
के बॉले माँ तुमि अबले, बहुबलधारिणीं नमामि तारिणीम्,
रिपुदलवारिणीं मातरम्।
वन्दे मातरम्॥

तुमि विद्या तुमि धर्म, तुमि हृदि तुमि मर्म,
त्वम् हि प्राणा:शरीरे, बाहुते तुमि माँ शक्ति,
हृदये तुमि माँ भक्ति, तोमारेइ प्रतिमा गड़ि मन्दिरे-मन्दिरे।
वन्दे मातरम्॥

त्वम् हि दुर्गा दशप्रहरणधारिणी, कमला कमलदलविहारिणी,
वाणी विद्यादायिनी, नमामि त्वाम्, नमामि कमलाम् अमलाम् अतुलाम्,
सुजलां सुफलां मातरम्।
वन्दे मातरम्॥

श्यामलाम् सरलाम् सुस्मिताम् भूषिताम्, धरणीम् भरणीम् मातरम्।
वन्दे मातरम्, वन्दे मातरम्॥

वन्दे मातरम्
चित्रात्मक रूपांतरण

प्रख्यात चित्रकार श्री टी.के. मित्रा जी ने 'वन्दे मातरम्' का अत्यंत प्रभावशाली एवं भावपूर्ण चित्रात्मक रूपांतरण प्रस्तुत किया था। उन्होंने इस अमर राष्ट्रगीत के भावों को चित्रों के माध्यम से सजीव अभिव्यक्ति प्रदान कर उसे एक विशिष्ट कलात्मक आयाम दिया। दुर्भाग्यवश, समय के साथ उनकी यह अमूल्य कृति अत्यंत दुर्लभ हो गई है।

आज, जब हम 'वन्दे मातरम्' की 150वीं वर्षगाँठ का उत्सव मना रहे हैं, तब उसकी उसी भावपूर्ण चित्रात्मक अभिव्यक्ति को पुनः स्मरण करने और नई पीढ़ियों के समक्ष प्रेरणा के रूप में प्रस्तुत करने की आवश्यकता प्रतीत होती है। 'वन्दे मातरम्' के मूल भाव, संदेश और आत्मा को अक्षुण्ण रखते हुए उसकी चित्रात्मक अभिव्यक्ति का यह एक विनम्र एवं श्रद्धापूर्ण प्रयास है।

वन्दे मातरम् ।

हे मातृभूमि! मैं तुम्हें प्रणाम करता हूँ।

Hail thee mother! To her I bow.

सुजलाम्,

तुम जल से समृद्ध हो,

Who with sweetest water o'erflows

सुफलाम्,

फलों से संपन्न हो।

With dainty fruits is rich and endowed

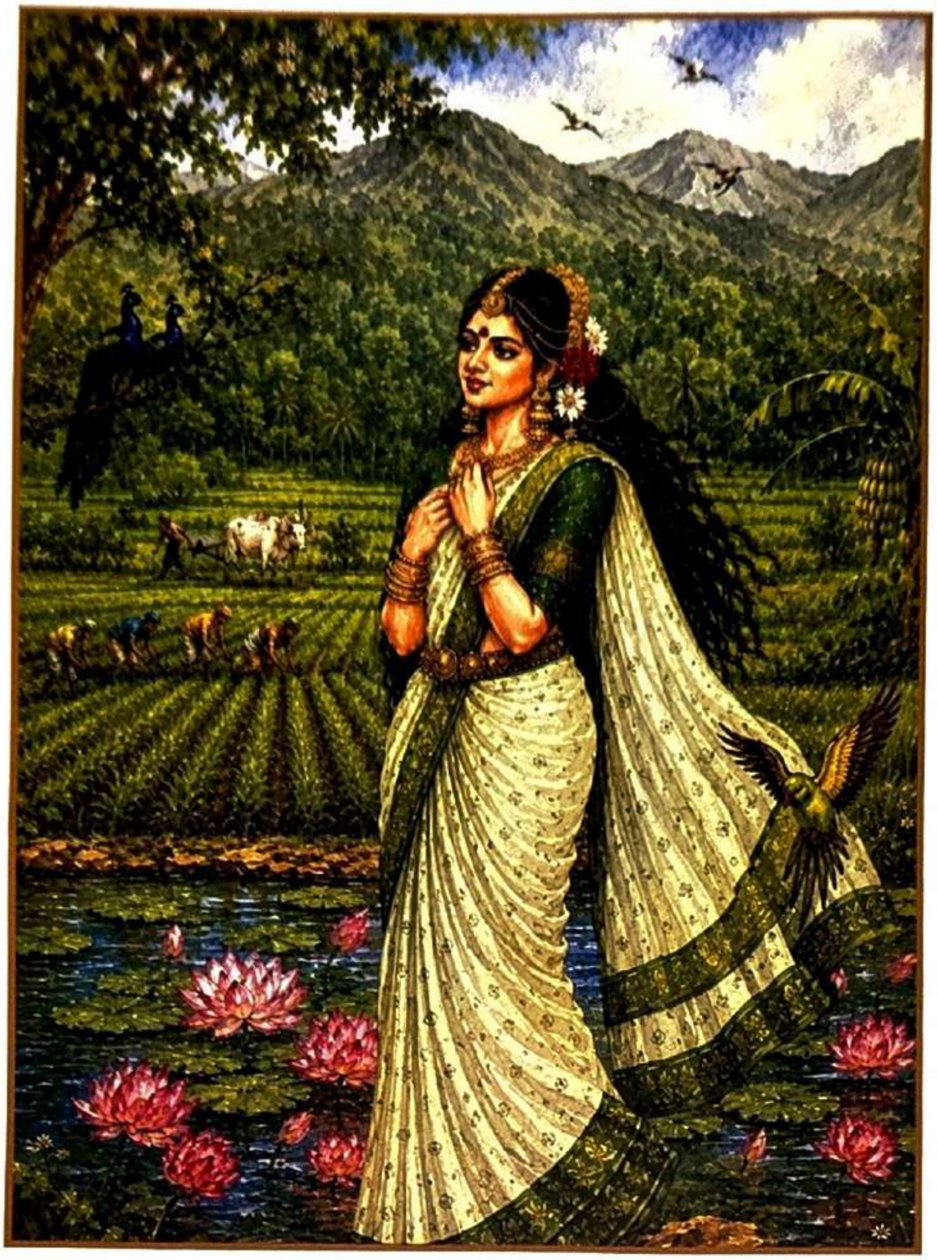

मलयजशीतलाम्, शस्यश्यामलाम् मातरम्।

मलय पर्वत से बहने वाले पवन के कारण तुम शीतल हो ।

तुम्हारे श्यामल खेत लहलहाते हैं।

And cooling whom the south wind blows;

Who's green with crops on her grow;

शुभ्रज्योत्स्ना पुलकितयामिनीम्,

चंद्रमा की ज्योत्स्ना से पुलकित तुम्हारी रात्रि है,

With silver moon beams smile her nights

फुल्लकुसुमित द्रुमदलशोभिनीम्,

असंख्य वृक्षों के खिले हुए पुष्पों से तुम्हारी शोभा वृद्धिंगत हुई है,

And trees that in their bloom abound adorn her;

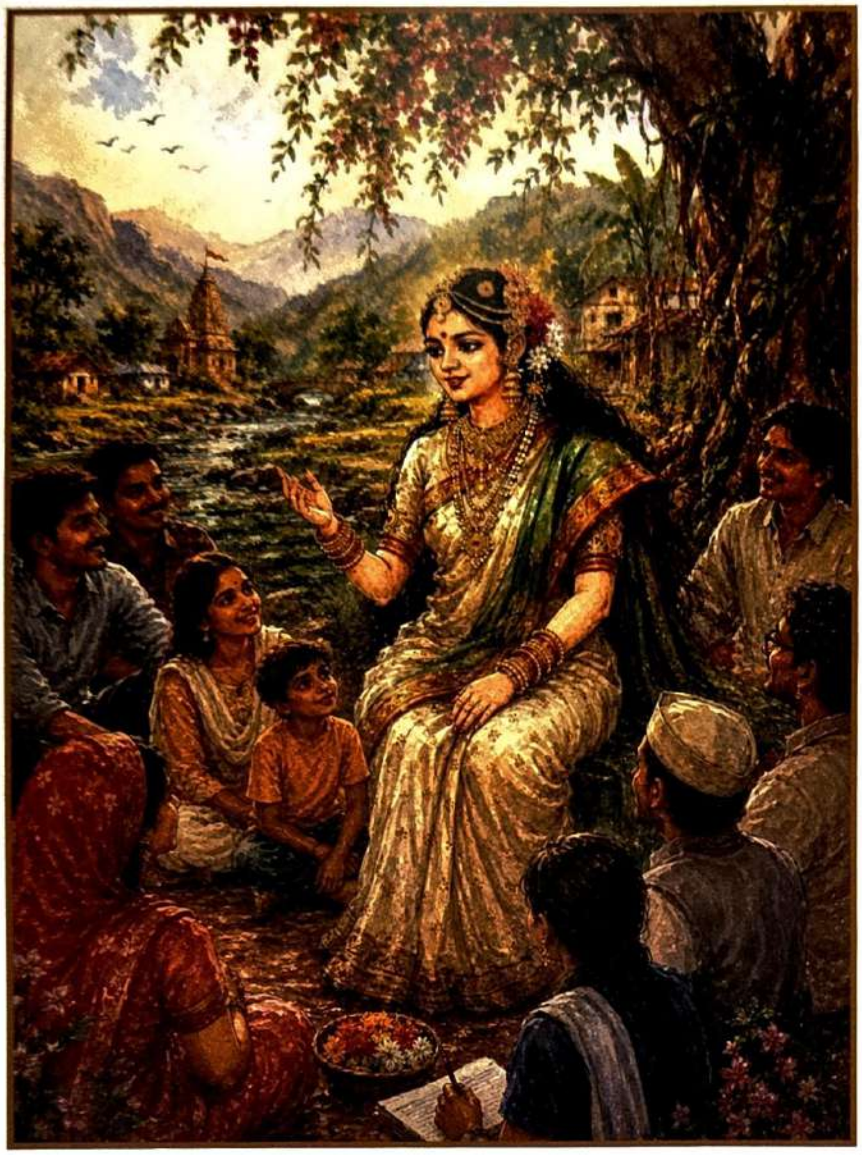

सुहासिनीम्, सुमधुरभाषिणीम्, सुखदाम् वरदाम् मातरम्।

तुम्हारी मुस्कान एवं वाणी अत्यंत मधुर है,
तुम सुख और वर प्रदान करने वाली माँ हो,

and her face doth beam with sweetest smiles,
sweet's her sound! Joy and bliss she doth bestow;
To such a mother down I bow.

कोटि-कोटि कण्ठ कल-कल निनाद कराले,
कोटि-कोटि भुजैर्धृत खरकरवाले,

करोड़ों कंठों से तुम्हारा जयघोष दिशाओं में गूँज उठता है।
तुम्हारी करोड़ों संतानों के हाथों में तेजस्वी तलवारें हैं,

Resounding with trumphal shouts, From millions and millions voices bold,
With devotion served by twice, As many hands that ably hold,
The sharp and shining rapier bold,

के बॉले माँ तुमि अबले,

कौन कहता है कि तुम अबला हो,

Thou a weakling we are told!

बहुबलधारिणीं,

अनन्त सैन्यबल (शक्ति) से संपन्न,

Proud in strength and prowess thou art,

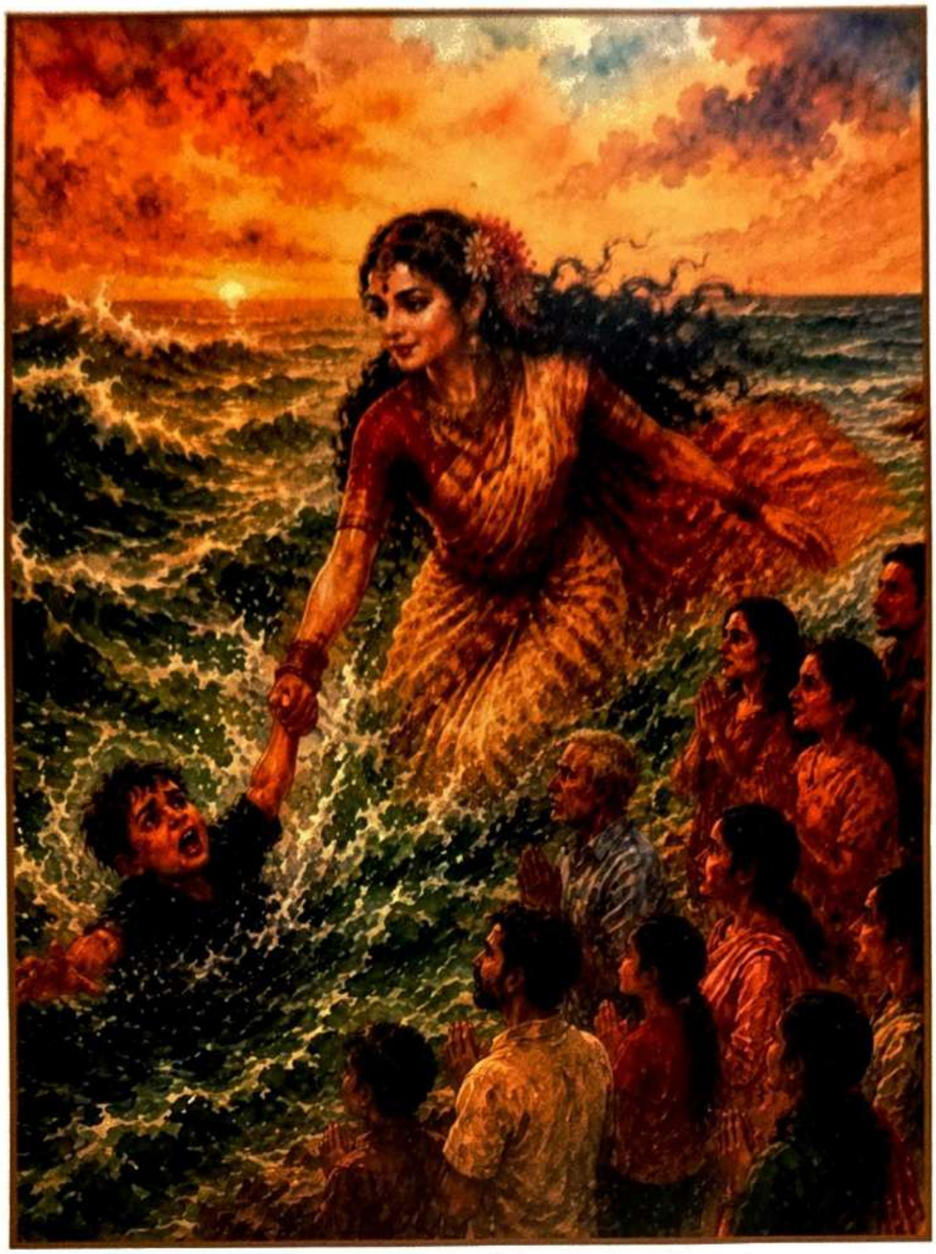

नमामि तारिणीम्,

हमारी रक्षा करने वाली,

Redeemer of thy children thou;

रिपुदलवारिणीं मातरम्।

शत्रुओं को पराजित करने वाली तुम हमारी माँ हो,

Chastiser of aggressive foes;

Mother, to thee thy child I bow.

तुमि विद्या तुमि धर्म, तुमि हृदि तुमि मर्म, त्वम् हि प्राणा:शरीरे,

तुम ही विद्या हो, तुम ही धर्म हो, तुम ही हमारा हृदय हो, तुम ही आत्मा हो,
तुम ही शरीर में बसने वाला प्राण हो,

Thou art knowledge, thou my faith, Thou my heart and thou my soul.

Nay more, thou art the vital energy, That moves my body from behind.

बाहुते तुमि माँ शक्ति, हृदये तुमि माँ भक्ति, तोमारेइ प्रतिमा गड़ि मन्दिरे-मन्दिरे।

हे माँ, तुम ही हमारी भुजाओं का बल हो, हे माँ, हमारे हृदय में तुम्हारे लिए
अपार भक्ति है, हमारे हर मंदिर में तुम्हारी ही प्रतिमा विद्यमान है,

Of my hands thou art the strength,
At my heart devotion thou, In each temple and each shrine,
To thy image we install and worship.

त्वम् हि दुर्गा दशप्रहरणधारिणी,
कमला कमलदलविहारिणी, वाणी विद्यादायिनी,

तुम ही दस हाथों में शस्त्र धारण करने वाली दुर्गा हो, तुम ही कमलदल पर विराजमान लक्ष्मी हो, तुम ही विद्या प्रदान करने वाली सरस्वती हो,

Durga bold who wields her arms With half a score of hands,
The science-goddess, Vani too, And Lakshmi who on lotus stands,

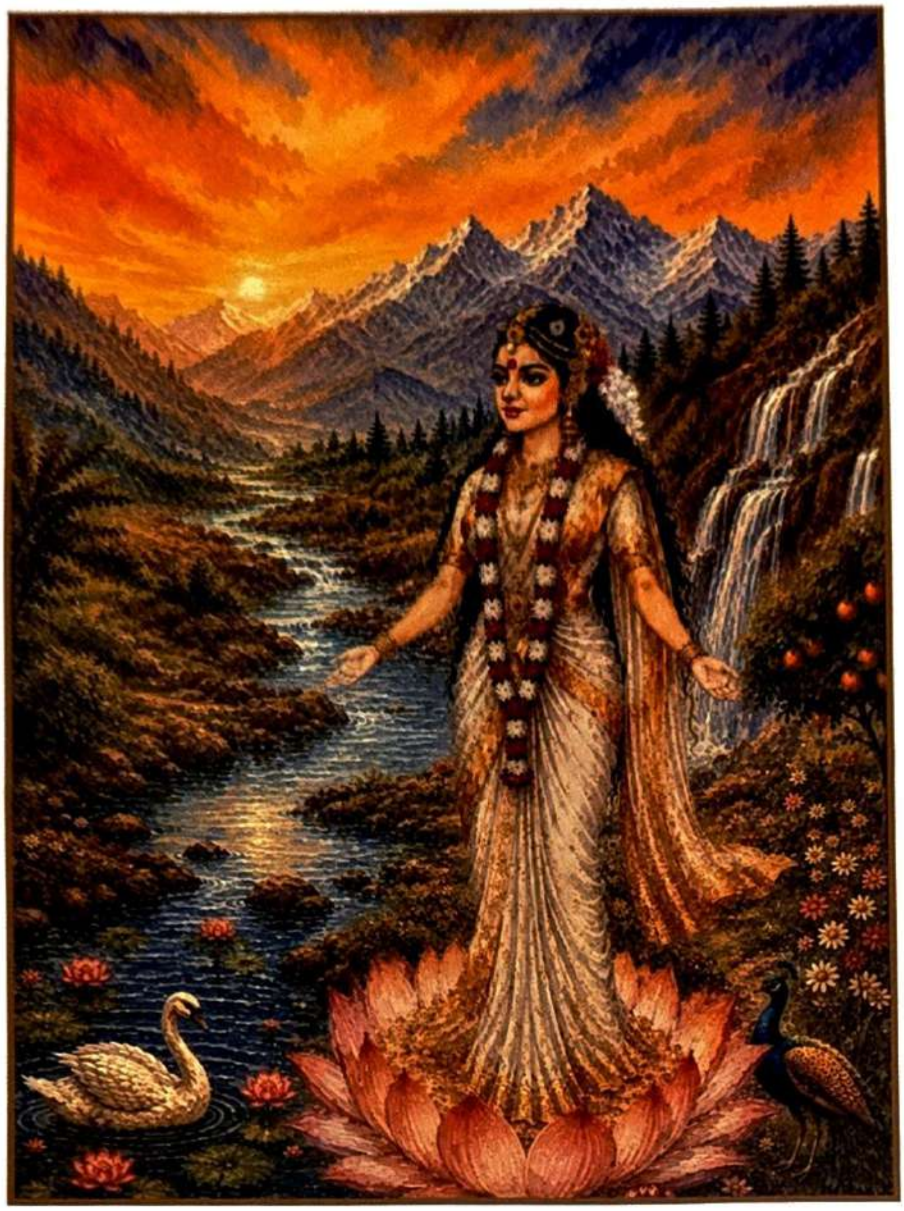

नमामि त्वाम्,
नमामि कमलाम् अमलाम् अतुलाम्, सुजलां सुफलां मातरम्।

मैं तुम्हें नमन करता हूँ, हे लक्ष्मीस्वरूप तुम्हें वंदन करता हूँ,
हे माँ, तुम अमला हो, अनुपम हो, सुजल हो, सुफल हो,

What are they but, mother, thou, To thee in all these forms I bow!
To thee! Fortune-giver, that art, To fault unknown, beyond compare,
Who dost with sweetest water flow, And on thy children in thy care
Dainty fruits dost rich bestow, To thee, mother, to thee I bow!

श्यामलाम् सरलाम् सुस्मिताम् भूषिताम्,
धरणीम् भरणीम् मातरम्। वन्दे मातरम्।।

श्यामल वर्ण से सुंदर, सरल स्वभाव से युक्त, मुखमंडल पर स्मित हास्य से शोभायमान,
अनेक अलंकारों से भूषित, नैकविध रत्नों को धारण करने वाली,
सभी जनों का पोषण करने वाली ऐसी तुम हमारी माँ हो, तुम्हें मेरा बारंबार प्रणाम।

To thee I bow, that art so green And so rich bedecked; with smile
Thy face doth glow; thow dost sustain And hold us-still unknown
to guile! Hail thee mother! To thee I bow!

प्रभात प्रकाशन प्रा. लि.
4/19 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002
संस्करण : 2026 • सर्वाधिकार : सुरक्षित • मुद्रक : ग्राफिक वर्ल्ड, नई दिल्ली

VANDE MATARAM *by* BANKIM CHANDRA CHATTOPADHYAY

Concept: AMIT SHAH • Inspired by: T.K. MITRA

Published by PRABHAT PRAKASHAN PVT. LTD., 4/19 Asaf Ali Road, New Delhi-110002
e-mail: prabhatbooks@gmail.com • www.prabhatbooks.com

ISBN 978-81-68021-11-2
9 788168 021112
₹120/-